ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

ब्रिक्स – आर्थिक एवं राजनीतिक संगठन

सुनीता गोयल
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय डूंगर कॉलेज,
बीकानेर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अनेक संगठनों का निर्माण हुआ है। अर्न्राष्ट्रीय संगठन दो परस्पर विरोधी तत्वों राष्ट्रीय संम्प्रभुता और अन्तर्राष्ट्रीय अन्योन्याश्रियता के बीच समझौते का प्रयास है। वर्तमान आद्यौगिक और आर्थिक युग में राष्ट्रों के मध्य अर्न्तनिर्भरता अपरिहार्य बन गई है। इसलिए राष्ट्र संगठनों का निर्माण करते है। उन्हीं संगठनों में से एक संगठन है ब्रिक्स। जिसकी स्थापना 2008 में हुई 2010 में दक्षिण अफ्रीका को शामिल करने पर इसका नाम ब्रिक्स हो गया। ब्राजिल, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के प्रथम अक्षरों के आधार पर इस संगठन का नामकरण हुआ है। विश्व बैंक अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए, आत्मनिर्भरता से आर्थिक विकास के लक्ष्य को हासिल करने के यह संगठन निरन्तर आगे बढ़ रहा है। सितम्बर 2017 तक इसके 9 शिखर सम्मेलन संम्पन्न हो चुके है आर्थिक विकास के साथ–साथ राजनीतिक रूप से भी मजबूती से कदम आगे बढ़ा रहा है। अनेक वैश्विक समस्याओं जैसे पर्यावरण प्रदूषण, आंतकवाद, साइबर क्राईम, ग्लोबल वार्मिंग, गरीबी, जनसंख्या नियंत्रण, भ्रष्टाचार के समाधान की दिशा में अग्रसर है। ब्रिक्स देशों की सबसे महत्वपूर्ण बात यही है कि ये देश अपने आपसी विवाद को दूर रखते हुए आर्थिक एवं राजनीतिक विकास की ओर कदम बढ़ा रहे है।

मुख्य शब्द : BRIC- ब्राजील, रूस, इण्डिया, चीन देशों का समूह, BRICS- ब्राजील, रूस, इण्डिया, चीन साउथ अफ्रिका देशों का समूह, बिम्सटेक– बंग्लादेश, इण्डिया, श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार देशों का समूह, विकासशील देश– विकास की ओर अग्रसर देश, शिखर सम्मेलन–शासन प्रमुखों का सम्मेलन, अक्षय ऊर्जा– जिसका क्षय न हो जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, अन्योन्याश्रियता– एक दूसरे पर आश्रित।

प्रस्तावना

ब्रिक्स – आर्थिक एवं राजनीतिक संगठन

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन स्वतंत्र और प्रभुता सम्पन्न राज्यों का एवं औपचारिक समूह होता है जिसकी स्थापना अन्तर्राष्ट्रीयशांति, सुरक्षा, सहयोग आदि कुछ विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है।

चार्ल्स पी. श्लीचर के अनुसार ''अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का अस्तित्व इसलिए है कि हम एक ऐसे अन्योन्याश्रित विश्व में रहते है, जिसमें मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति तब तक सम्भव नहीं, जब तक उसके जीवन के कुछ निश्चित पहलुओं को अन्तर्राष्ट्रीय आधार पर संगठित न किया जाए। मनुष्य की प्रमुख आवश्यकताएं शांति और समृद्धि है जिन्हें पाने के लिए वह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की कामना करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का अध्ययन राजनीति विज्ञान की अपेक्षाकृत एक नई शाखा है। बीसवीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों में विकास का प्रमुख क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की वृद्धि रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन दो परस्पर विरोधी तत्वों अथवा शक्तियों–राष्ट्रीय सम्प्रभुता और अन्तराष्ट्रीय अन्योन्याश्रियता के बीच समझौते का प्रयास है। यह अन्तर्निहित असंगति इनकी एक अनोखी विशिष्टता है। सम्प्रभूता की मांग है कि राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानकर अन्तर्राष्ट्रीय जगत में व्यवहार किया जाए और अपनी इच्छा के अतिरिक्त किसी दूसरे की इच्छा या ब्राह्य शक्ति के आदेशों से बाधित न हुआ जाए। जबकि अन्तर्राष्ट्रीय अन्योन्याश्रियता का तकाजा है कि राष्ट्र अपने अस्तित्व और विकास के लिए अन्य राष्ट्रों से सहयोग वर्तमान औद्योगिक और आर्थिक युग में राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक अन्तर्निभरता अपरिहार्य बन गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. ब्रिक्स जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की उपलब्धियों का अध्ययन करना।

2. वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों के समाधान की दिशा में ब्रिक्स के बढ़ते कदमों का अध्ययन करना।
3. अन्तर्राष्ट्रीय विश्व बैंक एवं मुद्रा कोष पर अपनी निर्भरता कम करने के ब्रिक्स के प्रयासों का अध्ययन करना।
4. विभिन्न देशों द्वारा अपने विवादों को दूर रखकर विकास के नए क्षेत्रों की तलाश का अध्ययन करना।
5. सद्भावना, शान्ति समझौते की दिशा की ओर बढ़ते कदमों का अध्ययन करना।

अन्योन्याश्रियता में वृद्धि और सम्प्रभुता सिद्वान्त से तीव्र लगाव – ये दोनों बातें इतनी परस्पर विरोधी है लेकिन इनमें से एक की भी समाप्ति सम्भव नहीं है अतः यही श्रेयकर समझा गया कि दोनों शक्यिों के बीच तालमेल बैठाया जाए कि संघर्षों, युद्धों की संभावना क्षीण हो जाए। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन दूसरी दिशा मे एक प्रभावी प्रयास है।

बीसवीं शताब्दी को अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की शताब्दी माना जाता है। इस शताब्दी में राष्ट्रसंघ तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे शांति संगठन अस्तित्व में आये तो दूसरी ओर अनेक महत्वपूर्ण संगठन–यूरोपीय साझा बाजार, दक्षेस, ओपेक, आसियान अरब लीग, अफ्रीकी एकता संगठन, जी–7,जी'–15 तथा राष्ट्रमण्डल गुटनिरपेक्ष संगठन, सार्क जैसे संगठन भी अस्तित्व में आये। इसके अतिरिक्त विभिन्न सैनिक –उत्तर अटलांटिक संन्धि संगठन (N.A.T.O) वारसा सन्धि संगठनों के प्रवाह में एक नया संगठन ब्रिक उभरा जिसकी स्थापना 2008 में चार देशों, ब्राजील, रूस, भारत तथा चीन द्वारा की गई थी। इन चारों देशों के नाम के पहले अक्षरों के आधार पर इस संगठन का नाम ब्रिक (BRIC) रखा गया था। सितम्बर 2010 में दक्षिण अफ्रीका को इस संगठन में शामिल किया गया अब इसका नामकरण (BRICS) कर दिया गया है।

ब्रिक्स का विचार सबसे पहले गोल्डमैन सैच कम्पनी के अर्थशास्त्री ओ नील ने 2001 में दिया था। इसके अनुसार चार देश ब्राजील, रूस, भारत तथा चीन विकास की आपार सम्भावनाओं से युक्त है तथा 2050 तक ये चारों देश विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं होंगी। इन चार देशों में विश्व की 40 % जनसंख्या निवास करती है तथा विश्व भू–भाग का 25 प्रतिशत हिस्सा इन देशों का वर्तमान सकल राष्ट्रीय उत्पादन 18.4 ट्रिलियन डालर है।

इस सम्बन्ध में सबसे पहली रिपोर्ट 2005 में प्रकाशित हुई। जिसका शीर्षक था–ड्रीमिंग विद ब्रिक्स–पैथ टू 2050 इस रिर्पोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है कि इन चारों देशों ने वैश्विक पूंजीवाद को स्वीकार करते हुए उसके अनुसार ही अपनी नीतियों व ढांचों में संशोधन कर लिया है अतः उनमें विकास की अपार सम्भावनाएं मौजूद है। इस रिपोर्ट में यह भी कहा कि इन चारों देशों की अर्थव्यवस्थाएं एक दूसरे की पूरक है। जहां एक ओर चीन तथा भारत निर्मित वस्तुओं और सेवाओं के महत्वपूर्ण आपूर्तिकर्त्ता है वहीं ब्राजील तथा रूस कच्ची वस्तुओं के उभरते हुए आपूर्त्तिकर्त्ता है। अतः इन चारों देशों मे आपसी सहयोग की व्यापक सम्भावनाएं मौजूद है।

गोल्डमैन सैच की दूसरी फालोअप रिपोर्ट 2007 में प्रकाशित हुई इस रिपोर्ट में भारत की विकास क्षमताओं पर प्रकाश डाला गया। गोल्डमैन सैच की अन्तिम रिपोर्ट 2010 में प्रकाशित हुई इस रिपोर्ट में ब्रिक्स देशों की वित्तीय स्थिति की चर्चा की गई इसके अनुसार 2030 तक पूंजी बाजार में ब्रिक्स देशों की हिस्सेदारी 41 % होगी। अब तक की रिपोर्ट का निष्कर्ष यह है कि यदि ब्रिक्स देशों की अर्थव्यवस्थाएं व अपनी वर्तमान गति से आगे बढ़ती रही तो शीघ्र ही वे अमेरिका तथा पश्चिमी अर्थव्यवथाओं से आगे निकल जाएगी।

गोल्डमैन सैच की रिपोर्ट को मूर्तरूप देने के लिए, आर्थिक विकास, अन्तर्राष्ट्रीय विश्व में सहयोग पूर्ण कदम बढ़ाने के लिए, विश्व अर्थ व्यवस्था में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए, ब्राजील, रूस, भारत, चीन, द0 अफ्रीका ने ब्रिक्स संगठन बनाया।

रूस को छोड़कर ब्रिक्स के सभी सदस्य विकासशील या नव औद्योगीकृत देश है। जिनकी अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है। ये राष्ट्र क्षेत्रीय और वैश्विक मामलों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते है वर्ष 2013 तक पांचों ब्रिक्स राष्ट्र दुनिया के लगभग 3 अरब लोगों का प्रतिनिधित्व करते है और ये राष्ट्र संयुक्त विदेशी मुद्रा भंडार में 5 खरब अमेरिकी डॉलर का योगदान करते है। इन राष्ट्रों का संयुक्त सकल घरेलू उत्पादन 15 खरब अमेरिकी डॉलर का है।

उल्लेखनीय है ब्रिक्स के सभी सदस्य जी–20 के भी सदस्य देश है ब्रिक्स देशों की यह मांग इस संदर्भ में उचित प्रतीत होती है कि गत 25 वर्षों में विश्व व्यवस्था में वैश्वीकरण के चलते व्यापक परिवर्तन हुए है इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप विश्व की आर्थिक शक्ति का केन्द्र यूरोप से खिसककर एशिया की तरफ आ गया है। इस काल में विकासशील देश चीन भारत ब्राजील द अफ्रीका ने उल्लेखनीय संम्भावनाएं भी विद्यमान है ब्रिक्स संगठन के निम्न उद्देश्य है–

1. एक बहुपक्षी खुली तथा सहभागी विश्व व्यवस्था की स्थापना करना।
2. सभी देश आर्थिक व राजनीतिक मामलों की निर्णय – निर्माण प्रक्रिया में भाग ले सके।
3. सदस्य देशों में विभिन्न क्षेत्रों में आपसी सहयोग को आगे बढ़ाना।
4. पश्चिमी प्रभुत्व वाली वर्तमान विश्व व्यवस्था के प्रबन्धन में परिवर्तन करना।
5. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक आदि में लोकतांत्रिक सुधार करना।
6. सदस्य देशों की आर्थिक तकनीकी क्षमता में वृद्धि करना।
7. शांति, सुरक्षा, विकास, गरीबी निवारण, रोजगार सृजन में समन्वित कार्यवाही।
8. आंतकवाद, नशीली दवाओं के व्यापार, भ्रष्टाचार, अपराध, समुद्री डकैती आदि चुनौतियों का डटकर सामना करना एवं परस्पर सहयोग करना।

ब्रिक्स के शिखर सम्मेलन

पहले ब्रिक्स समिट का आयोजन रूस के येकाटेरीबर्ग में 16 जून 2009 को किया गया था इस

समिट में शामिल पांच देशों के प्रमुख के तौर पर लूईजइनासियो, लूला दा सिल्वा, दीमित्री मेदवेदेव, मनमोहनसिंह और हू जिंतआकें ने शिकरकत की थी।

15 अप्रैल 2010 को दूसरा ब्रिक्स सम्मेलन ब्राजील में आयोजित हुआ और इस बार इसमें साउथ अफ्रीका को भी सदस्य देश के तौर पर प्रवेश मिला।

14 अप्रैल 2011 को तीसरे ब्रिक्स सम्मेलन का आयोजन चीन के सान्या में किया गया इस दौरान दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जैकब जुना की मौजूदगी ने इस सम्मेलन को और खास बनाया।

ब्रिक्स देशों का चौथा वार्षिक शिखर सम्मेलन (जिसमें इसके पांच सदस्य राष्ट्र ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्र या सरकार प्रमुखों ने भाग लिया था) का आयोजन भारत की राजधानी नई दिल्ली स्थित पांच सितारा होटल ताज महल में 29 मार्च 2012 को किया गया था। यह पहला अवसर है जब भारत ने किसी ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी की है। शिखर सम्मेलन का विषय था ''वैश्विक सुरक्षा स्थिरता और समृद्धि के लिए ब्रिक्स भागीदारी'' शिखर सम्मेलन में चर्चा का मुख्स विषय विकासशील देशों के लिए विश्व बैंक के समान एक ब्रिक्स बैंक का गठन करना।

नई दिल्ली में पहली बार ब्रिक्स व्यापार मेले की मेजबानी के लिए भारत की पहल का स्वगत किया यह ब्रिक्स आर्थिक भागीदारी के लिए रणनीति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कम पूंजी लागत पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना ग्रामीण एवं अविकसित क्षेत्र में स्वयंरोजगार के अवसर पैदा करना, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर न्यायसंगत धन वितरण को सुनिश्चित करने की दिशा में कदम बढ़ा रहे है। भारत द्वारा एम एस एम ई पर ब्रिक्स द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के आयोजन की सराहना की।

5 वाँ ब्रिक्स सम्मेलन (2013) द0 अफ्रीका स्थित डरबरन में 2013 को सम्पन्न हुआ यह सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय कानून को बढ़ावा देने, बहुस्तरीय सहयोग बढ़ाने और संयुक्त राष्ट्र की केन्द्रिय भूमिका को मजबूत बनाने की घोषणा के साथ सम्पन्न हुआ। 5 वें शिखर सम्मेलन में 2 हजार प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनमें पांचों देशों के प्रतिनिधि, अंतराष्ट्रीय और दक्षिण अफ्रीका के व्यापार क्षेत्र के प्रतिनिधि शामिल है। प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ने कहा–वैश्विक और एक दूसरे से जुड़ी दुनिया में हम सबका भविष्य भी एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। हम सभी की साझी आकाक्षाएं और एक जैसी चुनौतियां है। एक दूसरे की सफलता में हम सबका हित निहित है। उन्होनें कहा हम सभी को एकजुट होना चाहिए तीव्र विकास और समृद्धि के सृजन की नई राहो के लिए। हमारे पर्यावरण के संरक्षण तथा संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल के लिए।

ब्रिक्स का छठा शिखर सम्मेलन 15–16 जुलाई 2014 को ब्राजील के फोर्टालेजा शहर में सम्पन्न हुआ। जिसमें अन्य देशों के नेताओं के साथ भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भाग लिया। भारत वैश्विक आर्थिक प्रगति, शांति और स्थायित्व को प्रोत्साहन देने हेतु ब्रिक्स मंच को अत्यधिक महत्व देता है। 100 अरब अमेरिकी डॉलर कोष वाले विकास बैंक की स्थापना चीन की वित्तीय राजधानी शंघाई में की जाने का लक्ष्य रखा। जो अगले दो वर्षों में कार्य करना आरम्भ कर देगा। भारत को अगले छः वर्षों तक इसकी अध्यक्षता प्राप्त हुई है। इस प्रकार अमेरिकी नियंत्रण वाले विश्व बैंक और यूरोपीय संघ के प्रभूत्व वाले अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के समान्तर इस बैंक को खड़ा करने की कोशिश की गयी जिससे उभरती हुई तथा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के सड़क, रेल, बंदरगाह जैसे ढांचागत निर्माण कार्यों तथा सतत विकास परियोजनाओं हेतु कर्ज आसानी से मिल जायेगा।

इसके अलावा घोषणा पत्र के साथ फोर्टालेंजा कार्य योजना की 23 मदों का भी उल्लेख है जो विदेशी मामलों और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंधों, राष्ट्रीय सुरक्षा, वित्त, व्यापार, कृषि, स्वास्थ्य, विज्ञान, और प्रौद्योगिकी, नवाचार, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, जनसांख्यिकी, सहकारिता, स्थानीय प्रशासन शहरीकरण, आंतकवाद रोधी उपाय, मादक पदार्थों की तस्करी रोकने, भ्रष्टाचार उन्मूलन, ब्रिक्स स्थायी मिशनों/दूतावासों से परामर्श, सतत् विकास, पर्यावरण संरक्षण खेलकूद जैसे कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ब्रिक्स सदस्य देशों के बीच बैठकों के आयोजन से सम्बन्धित है। साथ ही उच्च शिक्षा श्रम और रोजगार, साामाजिक समावेशन, विदेशी नीति डायलॉग बीमा तथा पुनर्बीमा, ई–कॉमर्स जैसे नए क्षेत्राों में सहयोग का पता लगाने के लिए प्रयास किए जाने का आह्यन किया है।

सातवाँ शिखर सम्मेलन रूस के ऊधा में 8 से 9 जुलाई 2015 में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन की मुख्य थीम थी ''ब्रिक्स साझेदारी वैश्विक विकास में एक शक्तिशाली तत्व''। पांचों देशों के शासनाध्यक्षों ने विश्व एजेण्डा के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार–विमर्श करने के साथ साथ सदस्य देशों के मध्य आपसी साझेदारी मजबूत करने के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को चिह्यित किया। ब्रिक्स देशों ने खुलापन, एकजुटता, समानता, आपसी समझ पारस्परिक लाभ तथा समंकितता के आधार पर सदस्य देशों के मध्य सामरिक भागीदारी को व्यापक व मजबूत बनाने का निर्णय लिया। ब्रिक्स नेताओं ने समकालीन वैश्विक चुनौतियों जैसे शांति व सुरक्षा टिकाऊ विकास, गरीबी निवारण, रोजगार सृजन आदि के सम्बन्ध में समन्वित कार्यवाही करने का फैसला लिया।

उफा घोषणा में U.N.O. के सिद्धान्तों में आस्था व्यक्त की। सैनिक हस्तक्षेपों आर्थिक प्रतिबंध की प्रवृत्ति की आलोचना की। दूसरे देशों को सुरक्षा के नाम पर सुरक्षा खतरे में डालने का अधिकार नहीं है। समानता, मानव अधिकारो को लागू करने की बात भी कही गयी। वित्तिय व आर्थिक सुधार के लिए घरेलू समायोजन तथा नवाचार के द्वारा ही टिकाऊ विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है। ब्रिक्स आर्थिक साझेदारी रणनीति को स्वीकार किया गया। विश्व अर्थव्यवस्था के प्रबन्धन में ब्रिक्स व जी 20 समूह के सदस्यों के मध्य घनिष्ठ सहयोग व समन्वय का सहयोग किया।

गोवा में 15–16 अक्टूबर 2016 को 8 वां ब्रिक्स सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

वैश्विक अर्थव्यवस्था और अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना को मजबूत बनाने में नव विकास बैंक (एन डी बी) और आकस्मिक रिजर्व व्यवस्था (सी.आर.ए) के संचालन

की संतोषप्रद स्थिति के लिए स्वागत किया। इससे ब्रिक्स देशों में विकासित होने की ओर तत्पर है।

बिम्सटेक देशों के साथ (बंग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड सहित बंगाल की खाड़ी) मित्रता, शांति, विकास लोकतंत्र एवं समृद्धि के साझा लक्ष्य बढ़ाने में सहयोग के लिए एक सम्मेलन का आयोजन।

सयुंक्त राष्ट्र की केन्द्रीय भूमिका और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के लिए सम्मान के आधार पर लोकतांत्रिक और बहु ध्रुवीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए परिवर्तन के लिए ब्रिक्स की भूमिका की जरूरत।

अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान राजनीतिक एवं कूटनीतिक माध्यमों से विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में पहल।

ब्रिक्स देशों नें विश्वास प्रकट किया कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने के लिए राजनीतिक और कूटनीतिक माध्यमों से विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। एक तरफा आक्रामक उपायों के इस्तेमाल अच्छे विश्वास सिद्धान्तों के कार्यान्वयन, देशों की सम्प्रभुता, उनके आन्तरिक मामलों में गैरहस्तक्षेप, सहयोग की भावना वाले अन्तर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित नहीं है। ब्रिक्स देश सुरक्षा की अविभाज्य प्रकृत्ति के अनूठे महत्व पर जोर देते है। किसी भी राज्य को दूसरों की सुरक्षा की कीमत पर अपनी सुरक्षा को मजबूत नहीं करना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र के शांति अभियानों के लिए ब्रिक्स देशों का महत्वपूर्ण योगदान है। ब्रिक्स देश संयुक्त राष्ट्र के सामने आने वाली चुनौतियों का अनुभव करते है। साथ ही शांति बनाए रखने के सिद्धान्तों का पालन करते हुए अपनी भूमिका, क्षमता, प्रभावशीलता, जवाबदेही और दक्षता को मजबूत करने की जरूरत पर बल देते है।

गरीबी के उन्मूलन पर व्यापक केन्द्रित 2030 एजेंडा सतत् विकास के आशिंकी समायिक और पर्यावरणीय आयामों पर समान एवं संतुलित बल देता है।

ब्रिक्स देश मजबूत स्थिर, संतुलित और समग्र विकास के लक्ष्य को व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से प्राप्त करने के लिए मौद्रिक, राजकोषीय और संरचनात्मक जैसे सभी नीतिगत उपकरणों का उपयोग करने की अपनी दृढ़ता पर रहेंगे।

इस सम्मेलन में ब्रिक्स देशों ने 2020 तक व्यापार अर्थव्यवस्था एवं निवेश सहयोग के लिए ब्रिक्स रोडमैप के महत्व, क्षेत्रीय सहयोग तंत्र, आर्थिक एवं व्यापार मुद्दों पर ब्रिक्स संपर्क समूह, ब्रिक्स व्यापार परिषद, नव विकास बैंक, ब्रिक्स अंतर बैकिंग सहयोग तंत्र के बीच घनिष्ट सहयोग ब्रिक्स आर्थिक भागीदारी को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण है। आर्थिक हितों में सतत् प्रगति के लिए 13 अक्टूबर 2016 को नई दिल्ली में ब्रिक्स व्यापार मंत्रियों की बैठक के दौरान परिणामों का स्वागत किया।

सितम्बर 2017 में चीन ने श्यामेन में 9 वाँ ब्रिक्स शिखर सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस साल ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी चीन ने की। इस शिखर सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी हिस्सा लिया।

दो महीने से अधिक समय से चल रहे डोकलाम गतिरोध को भारत और चीन ने शिखर सम्मेलन शुरू होने से कुछ ही दिन पूर्व हल किया था। यह मुद्दा शिखर सम्मेलन में नहीं उठाया गया। इस वर्ष के शिखर सम्मेलन का विषय : एक उज्जवल भविष्य के लिए मजबूत भागीदारी था। इस शिखर सम्मेलन में आर्थिक तकनीकी सहयोग पर विशेष रूप से जोर दिया गया।

इसमें राजनीतिक सुरक्षा सहयोग, पीपुल टु पीपुल एक्सचेंज और आर्थिक सहयोग आदि विषयों पर चर्चा की गई।

जलवायु परिवर्तन और नवीकरणीय ऊर्जा जैसे मुद्दों को भी चर्चा में शामिल किया गया।

भारत द्वारा उठाए गए आतंकवाद के मुद्दों को भी इस शिखर सम्मेलन मे स्थान मिला। भारत के लिये यह एक बड़ी सफलता है कि चीन की धरती से आतंकवाद विरोधी बयान सामने आया। चीन वास्तव में आतंक का विरोधी है यह तो तब पता चलेगा जब वह घोषित वैश्विक आतंकी जैश–ए–मोहम्मद प्रमुख मसूद अजहर का नाम संयुक्त राष्ट्र के आतंकियों की 1267 समिति की सूची में शामिल करने के प्रयास पर अडंगा लगाना बंद करे। ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भारत ने आंतकवाद का मुद्दा उठाया और इसे ब्रिक्स श्यामेन घोषणापत्र 48 वें पैराग्राफ में शामिल कर इस पर चिंता जताते हुए लश्कर–ए–तैयबा जैश ए मोहम्मद सहित कुल 10 आतंकी संगठनों का नाम लिया गया। इस घोषणा पत्र में कहा गया कि कहीं भी किसी भी तरह और किसी का आतंकी हमला स्वीकार नहीं किया जायेगा। किसी भी तरह का आतंकवाद जायज नहीं। इस घोषणा पत्र में नाम लेकर तालिबान, अलकायदा, हक्कानी नेटवर्क और आईएस की भी निंदा की गई। आतंकवाद को रोकने में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भी अपील की गई यह भारत के लिए बड़ी सफलता है क्योंकि ब्रिक्स देशों के घोषणापत्र में सहमति होने का लाभ अन्य विदेशी मंचों पर भी मिलता है।

निश्चित रूप से श्यामेन ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की उपलब्धियां अगले दशक में सदस्य देशों में सहयोग की बुनियाद बनेगी जो ब्रिक्स के जरिये बेहतर दुनिया बनाने के लक्ष्य को हासिल करने में मददगार साबित होगी।

9 वाँ ब्रिक्स शिखर सम्मेलन 5 सितम्बर चीन के श्यामन शहर में समाप्त हुआ ब्रिक्स देशों के नेताओं ने सम्मेलन में खुलेपन, समावेशी, सहयोग और उभयन्जीत की भावना दोहरायी। वे आपस में और अधिक मजबूत और व्यापक रणनीतिक साझेदार सम्बन्धों का निर्माण करने और ब्रिक्स सहयोग का नया दशक शुरू करने की आशा व्यक्त की है।

भारत का हित इसी में है कि ब्रिक्स को पश्चिमी देशों की गिरफ्त को कम करने के लिए एक कारगर समूह के तौर पर विकसित करने में मदद करे और साथ ही उसे पश्चिमी देशों के साथ टकराव के रास्ते पर बढ़ने से रोके। ब्रिक्स समूह के 2001 में हुए पहले शिखर सम्मेलन से अब तक विश्व की भू राजनीतिक स्थिति में काफी बदलाव आ चुका है। और अनेक देशों की आर्थिक स्थिति भी काफी हद तक बदल गई है। ब्रिक्स में भारत

और चीन ऐसे देश है जो उसके आर्थिक एजेंडे को आगे ले जाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है।

मोदी हमारे विचार विमर्श के माध्यम से ब्रिक्स के भीतर आर्थिक सहयोग को बढ़ाने और वैश्विक आर्थिक स्थिरता और समृद्धि को बढ़ाने में हमारे सामूहिक प्रयासों की उम्मीद करता हूँ।

भारत वैश्विक आर्थिक वृद्धि शांति स्थिरता को प्रोत्साहित करने मे ब्रिक्स फोरम को बेहद अहमियत देता है। प्रधानमंत्री ने कहा–हमारी व्यापक सामाजिक, क्षेत्रीय और आर्थिक विविधता को देखते हुए हमारे लिए समावेश विकास एक विशेष चुनौती और जिम्मेदारी है।

ब्रिक्स की महत्वपूर्ण उपलब्धियां

विकास बैंक एवं आपात निधि कोष

इस समय ब्रिक्स का महत्व इसलिए भी बहुत बढ़ गया क्योंकि चीन ने एक सौ अरब डॉलर की आरम्भिक धनराशि से एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर एंड इनवेस्टमेंट बैंक शुरू कर दिया गया है। जिसमें चीन भारत और रूस सबसे बड़े शेयरधारक है। जापान को छोड़कर अमेरिका के लगभग सभी मित्र देश इसके सदस्य बन रहे है। सभी चाहते है कि बुनियादी ढांचागत विकास की प्रक्रिया से होने वाले लाभ में उनका भी हिस्सा हो। जो देश विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की जकड़न से मुक्त होना चाहते है, वे ब्रिक्स बैंक और चीन द्वारा शुरू किए इस बैंक में बहुत दिलचस्पी ले रहे है।

पश्चिमी देशों के प्रभुत्व वाले विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए एक बड़ा कदम उठाते हुए ब्रिक्स देश आपात निधि कोष के साथ ही एक विकास बैंक की स्थापना करने पर सहमत हो गए है। ब्रिक्स समूह के पांच सदस्य देश के नेताओं भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, चीन के राष्ट्रपति जी जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमीर पुतिन, ब्राजील के राष्ट्रपति डिल्मा गसेफ और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जैकब जुमा ने ब्रिक्स विकास बैंक और आपात निधि कोष की स्थापना सम्बन्धी एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। ब्रिक्स देशों को एक अलग विकास बैंक की जरूरत क्यों पड़ी? क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी वित्तीय संस्थाएं विकासशील देशों को उनकी जरूरत के हिसाब से कर्ज देने में नाकाम रही है। विश्व बैंक की वेबसाईट के अनुसार बैंक विकासशील देशों को हर साल 40–60 अरब डॉलर के करीब कर्ज देता है जबकि इन्हें विकास के लिए एक खरब डॉलर की जरूरत है। इसके अलावा अनौपचारिक रूप से विकासित देशों ने ये तय कर लिया है कि विश्व बैंक का अध्यक्ष अमेरिकी होगा जबकि अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का अध्यक्ष यूरोप से होगा। नोबेल पुरस्कार विजेता और वित्तीय मामलों के जानकार जोजेफ स्टिग्लिट्स कहते है कि ब्रिक्स बैंक एक ऐसा आइडिया है जिसके पूरा होने का समय आ गया है। इस बैंक की जरूरत इसलिए है कि विकासशील देश अब इस बैंक से कर्ज ले सकते है, इसके अलावा वो अमेरिका और यूरोप के बजाए अब उभरते बाजार में निवेश कर सकते है। जिससे विकसित देशों के वित्तीय वातावरण की अनिश्चितता से बचा जा सकता है।

ब्रिक्स बैंक का पहला मुख्य कार्यकारी (सीईओ) या अध्यक्ष भारत से नियुक्त किया जाएगा। इसके बाद ब्राजील और रूस को इसका प्रबंधन सौंपा जाएगा। इस बैंक का मुख्यालय शंघाई में होगा और इसका एक क्षेत्रीय कार्यालय दक्षिण अफ्रीका में खोला जाएगा।

विश्व बैंक की स्थापना का केवल आर्थिक पहलू ही नहीं है यह ऋण से जुड़ी शर्तों को तय करने में विश्व बैंक से नरम रूख अपना सकता है अन्य विकास बैंक जो शर्ते तय करते है वे प्रायः सम्बन्धित देशों की सम्प्रभुता में हस्तक्षेप करने वाली होती है। उभरते बाजारों और विकासशील देशों से बचत को अधिक उपयोगी उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल कर ब्रिक्स बैंक वैश्विक अर्थव्यवस्था में पुनः संतुलन कायम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ब्रिक्स बैंक को 50 अरब डॉलर की पूंजी से शुरू किया गया जिसमें पांचों देश 10–10 अरब डॉलर का योगदान करेगें इसके अलावा 100 अरब डॉलर के आपात निधिकोष में चीन सबसे अधिक 41 अरब डॉलर जबकि ब्राजील भारत और रूस प्रत्येक 18 अरब डॉलर का अंशदान देगें।

अक्षय उर्जा विकास

ब्रिक्स देशों ने न्यू डेवलपमेंट बैंक और मंत्रालय के सहयोग से अक्षय उर्जा का संयुक्त रूप से विकास करने का दृढ़ संकल्प लिया है। ब्रिक्स देश अक्षय उर्जा के विकास को बढ़ावा देने में केन्द्रिय भूमिका में निभाने का संकल्प लिया है। ब्रिक्स देश दुनिया में अक्षय ऊर्जा मंत्री बीजिंग में क्लीन एनर्जी मिनिस्ट्रियल के तहत मिले थे। इसमें एक संयुक्त बयान जारी किया गया था जिसमें अक्षय ऊर्जा विकास को बढ़ावा देने के इरादे को परस्पर सहयोग प्रदान करने का संकल्प लिया गया। जुलाई में आयोजित हैम्ब्रग जी 20 समिट में भी ब्रिक्स के नेताओं ने पेरिस समझौते के प्रति अपने समर्थन को औपचारिक रूप से दोहराया था। दुनिया में अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में ब्रिक्स देशों की वर्ष 2016 में दुनिया में स्थापित अक्षय ऊर्जा क्षमता में ब्रिक्स देशों की हिस्सेदारी 38 प्रतिशत थी जो वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में ब्रिक्स देशों की भागीदारी (वर्ष 2015–22.5%) से ज्यादा है। अक्षय ऊर्जा में दो तिहाई हिस्सेदारी के साथ चीन का दबदबा है। लेकिन ब्राजील और भारत भी मजबूती से आगे बढ़ रहे है।

वित्तिय विश्लेषण सम्बन्धी कार्य इक्वेटोरियल के मैनेजिंग पार्टनर जय शारदा ने कहा कि वैश्विक स्तर पर अक्षय ऊर्जा की मांग की पूर्ति में ब्रिक्स देशों की प्रमुख भूमिका निभाना जारी है। ब्रिक्स देश अक्षय ऊर्जा क्षमता में कुल निवेश के करीब 40 % हिस्से का योगदान करते है लेकिन अभी बहुत काम किया जाना बाकी है। एन डी बी बैंक ने वर्ष 2017 में अक्षय डॉलर के निवेश को अपना लक्ष्य बना रहा है। भारत इस वक्त वायु तथा सौर ऊर्जा के क्षेत्र में तेजी से विस्तार के जरिए रूपान्तरण के दौर से गुजर रहा है। भारत सरकार अक्षय ऊर्जा को लेकर अपनी महत्त्वकांक्षाओं को तेजी से बढ़ा रही है। और वर्ष 2027 तक उसके अक्षय ऊर्जा उत्पादन के 275 गीगावॉट के स्तर तक पहुंचाने का अनुमान है। देश में कुल बिजली उत्पादन क्षमता ऊर्जा संयत्रों का योगदान 17 % से ज्यादा

है। इस आकांक्षा के साथ भारत के पास वैश्विक ऊर्जा तंत्र के भविष्य में मूलभूत बदलाव लाने की क्षमता है।

मोदी ने कहा, हमारे पांच देशों में पूरक कौशल और क्षमता है जो अक्षय और सौर ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दे सकते है। हम नव विकास बैंक से स्वच्छ ऊर्जा खासकर सौर ऊर्जा के लिए ज्यादा फंडिग की इच्छा रखते है। उन्होंने कहा कि जलवायु सहनशीलता के विकास के लिए जरूरी है कि देश अपने यहां उपलब्ध सभी संसाधनों का उपयोग करे।

प्रधानमंत्री ने कहा कि ब्रिक्स देश भारत और फ्रांस द्वारा नवम्बर 2015 में शुरू किये गये अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठजोड़ (आई एस ए) के साथ काम कर सकते है। नवीकरणीय ऊर्जा अनेक लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण है।

ब्रिक्स फिल्म महोत्सव प्रथम एवं द्वितीय

प्रथम ब्रिक्स फिल्म महोत्सव (2016) – 2 से 6 सितम्बर 2016 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया।

23–27 जून 2017 के मध्य द्वितीय ब्रिक्स फिल्म महोत्सव का आयोजन दक्षिण पश्चिमी चीन के सिचुआन प्रांत में आयोजित किया गया।

इस फिल्म महोत्सव में ब्रिक्स देशों की 30 फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ब्रिक्स फिल्म महोत्सव और फिल्म पुरस्कारों का प्रस्ताव किया था।

इन फिल्म महोत्सव का उद्देश्य सहनशक्ति आपसी सहयोग बढ़ाना एवं सद्भावना का माहौल तैयार करना है।

निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में ब्रिक्स उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को मजबूती प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। अर्थव्यवस्था को अपने प्रयासों से सफलता की ऊंचाइयों पर ले जाने का लक्ष्य हासिल किया जा रहा है। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में जो अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। जैसे आतंकवाद, भ्रष्टाचार, साइबर क्राइम, परमाणु अस्त्र, बाजार मे उतार चढ़ाव, ऋण की समस्याएं, आर्थिक अस्थिरता, मंहगाई, गरीबी रोजगार, जनसंख्या वृद्धि पर्यावरण संरक्षण, आदि चुनौतियों का साथ मिलकर समाधान की दिशा में कदम बढ़ा रहे है। आगे आने वाले समय में ब्रिक्स की प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है। भारत के लिए तो विशेष महत्व है ही। क्योंकि ब्रिक्स संगठन में सभी देश आपसी तनाव को विवाद को दूर कर आर्थिक सफलता के लिए कदम से कदम मिला कर बढ़ रहे है। संगठन हमेशा शक्ति प्रदान करता है। अतः ब्रिक्स देश भी संगठित होकर सुनहरे भविष्य की ओर कदम बढ़ा रहे है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारतीय अर्थव्यवस्था, रमेश सिंह, Tata MC. Graw hill Education 2016*
2. *अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, डॉ0 एम.पी. राय, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर–2012*
3. *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, डॉ0 एस.सी. सिंघल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा 2017*
4. *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, सिद्धान्त और व्यवहार, डॉ0 पुष्पेश पंत, श्रीपाल जैन, डॉ0 राखी पंचौला मीनाक्षी प्रकाशन– मेरठ– 2016–17*
5. *The BRICS the future of Global order, oliver stunkel, Lexington Books 2015*
6. *प्रतियोगिता दर्पण – October 2015*
7. *प्रतियोगिता दर्पण – जून – 2016*
8. *प्रतियोगिता दर्पण – अगस्त 2017*
9. *दृष्टि 2015 समसमायिक घटना चक्र (SSGC Group)*
10. *सामान्य अध्ययन 2015–Tata UC Graw hill Education*
11. *Internet*